Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

भारतीय संस्कृति, कला और समाज पर ग्लोबल साउथ संघ का असर: अनामिका के काव्य के संदर्भ में

वर्षा कुमारी यादव	शोधार्थी (हिन्दी), चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान).
डॉ. मधु वर्मा	सहायक आचार्य (हिन्दी), चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान).

ABSTRACT:

भारतीय समाज अपनी कला व संस्कृति पर किस तरह गर्व करता था और आज भी करता है इन सभी बातों का उल्लेख हिंदी की प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका ने अपने काव्य में किया है। आज भारत में दूसरे देशों की संस्कृति को अपनाया जा रहा है तथा दूसरे देशों में भी भारतीय संस्कृति व कला को अपनाया जा रहा है। इसी से ग्लोबल संघ में एकता का भाव भी देखा जा सकता है । अनामिका के काव्य में भारतीय संस्कृति और समाज से जुड़े अनेक पहलू दिखते हैं जो कि ग्लोबल साउथ संघ के सापेक्ष भी है। उनकी कविताओं में स्त्री के लिए सौहार्द और सख्य का माहौल बनाते हुए भारतीय समाज और जनजीवन में होने वाली घटनाओं तथा हलचलों को भी दिखाया गया है।

KEYWORDS:

भारतीय संस्कृति, कला और समाज, ग्लोबल साउथ, काव्य ।

परिचय

भारतीय संस्कृति, कला व समाज पर पश्चिमी देशों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा है। इसी के दौरान ग्लोबल साउथ में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। भारतीय समाज अपनी कला व संस्कृति पर किस तरह गर्व करता था और आज भी करता है इन सभी बातों का उल्लेख हिंदी की प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका ने अपने काव्य में किया है। आज भारत में दूसरे देशों की संस्कृति को अपनाया जा रहा है तथा दूसरे देशों में भी भारतीय संस्कृति व कला को अपनाया जा रहा है। इसी से ग्लोबल संघ में एकता का भाव भी देखा जा सकता है । अनामिका के काव्य में भारतीय संस्कृति और समाज से जुड़े अनेक पहलू दिखते हैं जो कि ग्लोबल साउथ संघ के सापेक्ष भी है। अनामिका की कविताओं में स्त्री की स्थिति को अनेक रूपों में दिखलाया है। उनकी कविताओं में स्त्री के लिए सौहार्द और सख्य का माहौल बनाते हुए भारतीय समाज और जनजीवन में होने वाली घटनाओं तथा हलचलों को भी दिखाया गया है। किस प्रकार से भारतीय समाज आज ग्लोबल साउथ की संस्कृति व कला को अपनाने लगा है। अनामिका ने दिखाया है कि मनुष्य आज आरामदायक जीवन जीने के लिए दूसरे देशों का अनुकरण करने लगा है।

अनामिका ने एक तरफ अपनी कविताओं में भारतीय महिलाओं के बारे में लिखा है जो कि घर की रसोई से लेकर दूसरे के खेतों में काम करने वाली महिलाओं तक के अनकहे अहसास लिखे हैं अनामिका भारतीय स्त्री के बारे में लिखती है -

"वह रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी,

ज्वालामुखी बेलते हैं पहाडा ।

भूचाल बेलते हैं घर,

सन्नाटे शब्द बेलते हैं, भाटे समुन्दर ।

रोज सुबह सूरज में,

एक नया उचकुन लगाकर |

एक नई धाह फेंककर,

वह रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी ।"[1]

यहां पर कवयित्री ने स्त्री की दैनिक दिनचर्या के बारे में बताया है कि जिस प्रकार पृथ्वी घूमती रहती है, उसी प्रकार घरेलू व कामकाजी नारी भी घर व बाहर के कार्य में तल्लीन होकर व्यस्त रहती है।

दूसरी तरफ अनामिका ने साउथ संघ की महिलाओं के बारे में भी चर्चा की है।

21वीं सदी के शुरुआती दशकों में ग्लोबल साउथ के प्रति रुचि और ध्यान में उल्लेखनीय गिरावट आई थी। हालांकि हाल के दिनों में ग्लोबल साउथ ने अपना महत्व और प्रासंगिकता फिर से हासिल कर ली है, जो उभरती वैश्विक व्यवस्था को आयाम देने में क्षेत्र के महत्व की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है।

अनामिका ने अपने काव्य में भारतीय व ग्लोबल संस्कृति के रहन सहन खान पान व जीवन स्तर को भी दिखाया है। भारतीय समाज अपने देश की संस्कृति को धीरे धीरे छोड़ते जा रहे हैं व पश्चिमी देशों की संस्कृति को तेजी से ग्रहण करते जा रहे हैं। लड़कियाँ पश्चिमी पहनावे को अपना रही है। कवयित्री ने बताया है कि हमें अपनी संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए | अनामिका एक संवेदनशील, करुणामयी स्त्री की नजर से अपने समय व समाज को देखती हैं। स्त्री- विमर्श के दौर में स्त्रियों के संघर्ष और शक्ति का चित्रण तो अपनी अपनी तरह से हो रहा है; लेकिन महादेवी वर्मा ने जिस वेदना और करुणा को अपनी कविता के केंद्र में रखा था (वेदना में जन्म, करुणा में मिला आवास) उसका विस्तार केवल अनामिका ही कर पाती है । " [2]

भारतीय समाज में अनेक विमर्शों को देखा जा सकता है जैसे स्त्री विमर्श दलित विमर्श आदि लेकिन साउथ के देशों में यह समस्या नहीं है। अनामिका ने भी अपने काव्य में इन विमर्शों पर अपनी लेखनी चलाई है। इनके विमर्शों में लोक, परिवार तथा सार्वभौमिकता है। ये समाज के दो पहिए स्त्री और पुरुष के मध्य समानता चाहती है।

"बराबरी का यह साथ तभी हो सकेगा जब पुरुष अति पुरुष न रहे और ना ही स्त्रियां अति स्त्री । एक ध्रुवीय विश्व न माइक्रो स्तर पर अच्छा है न मैक्रो स्तर पर। संतुलन ही सुख का मूलमंत्र है । सरप्लस न क्रोध का चाहिए न कामना का ।" [3]

REFERENCES

1. अनामिका, बीजाक्षर वाणी प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली प्रथम संस्करण 2019, पृष्ठ संख्या – 27
2. मदन कश्यप, लेख ठूंठ पर पत्ती के फूट पड़ने की जिद्दी धमक अनामिका एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या – 49
3. अनामिका, त्रियाचरित्र उत्तर कांड, पृष्ठ संख्या – 3